

## बाजारवादी संस्कृति में हिन्दी एवं मीडिया : वर्तमान एवं भविष्य

डॉ. ऋषिपाल

अध्यक्ष एवं एसोसिएट प्रोफेसर,  
हिन्दी-विभाग, बाबू अनन्त राम  
जनता कॉलेज, कौल, कैथल

Email: [rishipalsuman@gmail.com](mailto:rishipalsuman@gmail.com)

वैश्वीकरण एवं बाजारवादी संस्कृति ने हिन्दी भाषा के समक्ष समस्या पैदा कर दी है। हिन्दी ही नहीं अपितु सभी भाषाओं को संसार में अपना आधिपत्य स्थापित करने के लिए बाजार वा व्यापार का सहारा चाहिए होगा। जहां तक हिन्दी की बात है, सरकारों या व्यवस्था से हमें बहुत आशा नहीं है। देखा जाए तो हिन्दी के प्रचार-प्रसार में हिन्दी सिनेमा, हिन्दी गीतों का ही सरकारों से अधिक योगदान है। संसार के लगभग 140 देशों में या उससे अधिक आज हिन्दी बोली जाती है या समझी जाती है या पढ़ी और पढ़ाई जाती है। विडम्बना इस बात की है कि आज भी हिन्दी को हमारे देश में राष्ट्र भाषा का दर्जा नहीं मिला है। हिन्दी हमारी मातृ-भाषा है। वर्तमान में हिन्दी की दशा को देखकर दुःखान्त की पंक्तियाँ याद आती हैं –

“हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए,  
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।

दुख इस बात का भी है कि हमारे देश में गलत अंग्रेजी बोलने वाले को सही हिन्दी बोलने वाले से अधिक सम्मान मिलता है। यह सही नहीं है। हमें आवश्यकता इस बात की है कि गलत हिन्दी बोलने वाले को सही अंग्रेजी बोलने वाले से अधिक स्नेह, आदर व सम्मान मिलना चाहिए। शायद इस संदर्भ में मुक्तिबोध की पंक्तियाँ हमें सही संदेश देती प्रतीत होती हैं –

“अब अभिव्यक्ति के सारे खतरे,  
उठाने ही होंगे,  
तोड़ने होंगे ही मठ और गढ़ सब,  
पहुँचना होगा दुर्गम पहाड़ों के उस पार,  
तब कहीं देखने को मिलेंगी बाँहे .....।”

मीडिया को किसी भी देश का चौथा स्तम्भ कहा जाता है। भारत संसार का सबसे बड़ा लोकतंत्र देश है। हमारे देश में हमें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्राप्त है। निश्चित ही मीडिया समाज का दर्पण है। किसी भी राष्ट्र की व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए मीडिया, प्रेस, समाचार की आवश्यकता नितान्त जरूरी है। हिन्दी की वर्तमान स्थिति को इस संदर्भ में देखते हुए डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा कहते हैं कि – “सूचना संसार की दृष्टि से हिन्दी दुनिया के कोने-कोने में बसे भारतवासियों के लिए महत्वपूर्ण बनी हुई है। अखबार, न्यूज चैनल, रेडियो से लेकर सोशल मीडिया तक विस्तारित हिन्दी का प्रयोग विश्व मंच पर बढ़ा है तो उसमें विदेशों में बसे हिन्दी प्रेमियों के अविराम प्रयत्न उल्लेखनीय हैं।”<sup>1</sup>

पत्रकारिता को हम दो रूपों में देखते हैं – प्रिन्ट मीडिया एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया। वर्तमान में मीडिया का क्षेत्र व्यापक है। आज समाचार-पत्र, टेलीविजन, रेडियो, इंटरनेट, फिल्म, सोशल साइट्स आदि सभी मीडिया के तहत हैं। राष्ट्र और राष्ट्रभाषा के विकास में मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण है। वर्तमान समाज में मीडिया की भूमिका बहुआयामी हो गई है। मात्र सूचना देना उसका उद्देश्य नहीं है वरन् मनोरंजन प्रदान करना, सम्पूर्ण विश्व के भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक संरचना और राजनैतिक गतिविधियों से लोगों को अवगत कराना व उनका प्रचार-प्रसार भी उसका लक्ष्य है। नरेन्द्र मिश्र के शब्दों में, “मीडिया को यदि समाज के वातावरण को मापने वाला तापमापक या समाज की दूरबीन कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। मीडिया समाज का आईना है, मीडिया जनता की संसद है, जिसका अधिवेशन चलता रहता है। इस मीडिया रूपी संसद का कभी सत्रावसान नहीं होता। जिस प्रकार संसद में विभिन्न प्रकार की समस्याओं पर

चर्चा की जाती है, विचार-विमर्श किया जाता है, सरकार का ध्यान आकृष्ट किया जाता है, उसी प्रकार मीडिया का स्वरूप भी व्यापक तथा बहुआयामी होता है। नेपोलियन चार विरोधी अखबारों से जितना भयभीत रहता था, उतना चार बटालियों से नहीं। इससे मीडिया की महिमा व महत्त्व प्रतिपादित होता है।<sup>1</sup> मीडिया की शक्ति के विषय में अकबर इलाहाबादी का यह कथन सटीक है –

‘खींचो न कमान को, न तलवार निकालो,  
जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो।’

भारत बहु भाषी देश है। यहां अलग-अलग जाति-धर्म, वर्ग के लोग रहते हैं। हिन्दी समस्त देश को एक सूत्र में पिरोने का महत्ती कार्य कर सकती है और कर भी रही है। “भारत जैसे एक बहुभाषी और सामाजिक संस्कृति वाले राष्ट्र में राष्ट्र को सुसंगठित रहना बहुत ही महत्त्वपूर्ण कार्य है और इस कार्य को हिन्दी द्वारा भली-भांति निभाने का ज्वलंत चित्र स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान अनुभव किया गया है।”<sup>2</sup> जैसा कि विदित है लोकतंत्र के चतुर्थ स्तम्भ के रूप में प्रेस जगत को मान्यता प्रदान की गयी है। प्रेस को राष्ट्र का चौथा खंभा कहा जाता है। वस्तुतः किसी देश को सुव्यवस्थित ढंग से चलाने के लिए जहां कार्यपालिका, न्यायपालिका व विधायिका रूपी तीन खंभों की आवश्यकता होती है, वहीं इन तीनों से आम आदमी को जोड़े रखने का महत्त्वपूर्ण कार्य प्रेस/समाचार/मीडिया के अन्य साधन करते हैं। मीडिया की आवश्यकता पर टिप्पणी करते हुए अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री जैफर्सन ने कहा था, “यदि उन्हें यह निर्णय लेने के लिए कहा जाए कि वह एक ऐसी सरकार को पसंद करेंगे, जिसमें प्रेस का कोई स्थान न हो, या फिर समाचार पत्र हों? किन्तु कोई सरकार न हो तो उन्हें यह निर्णय लेने में एक पल भी संकोच नहीं होगा कि वे सरकार नहीं, समाचार-पत्रों को स्वीकार करेंगे।”<sup>3</sup> जैसा कि स्पष्ट है कि शेष तीन स्तम्भों का सम्बन्ध सीधा राज सत्ता से था, किन्तु प्रेस जगत न तो राजसत्ता का अंग था और न ही उनका समर्थक। एक निष्पक्ष और तटस्थ भूमिका वाला यह स्तम्भ कम समय में ही एक विशेष पहचान बनाने में सफल रहा। प्रेस जगत की यह एक विशिष्ट उपलब्धि मानी जा सकती है। राजसत्ता के विरोध के उपरान्त भी प्रेस जगत ने अपनी अलग पहचान इसलिए बनाई क्योंकि उसकी ताकत राजसत्ता में न होकर जनसत्ता में निहित थी। प्रेस जगत का सीधा नाता समाज कल्याण के लिए था। प्रेस द्वारा जनता के हित के लिए संघर्ष किया गया तथा जनता द्वारा समाज हित के लिए किये गये संघर्षों का केवल समर्थन ही नहीं किया अपितु उन संघर्षों में स्वयं सम्मिलित होकर भागीदारी भी निभायी।<sup>4</sup>

समाचार-पत्रों का इतिहास बहुत पुराना है। जया प्रियदर्शिनी के शब्दों में, “हिन्दी ने अपना रूप समय-समय पर आवश्यकतानुरूप परिवर्तित किया है। इस क्रम में भारतेन्दु एवं द्विवेदी जैसे पुरोधाओं ने हिन्दी भाषा की शुद्धता को जहां आदर्श माना है, वहीं प्रभाष जोशी जैसे पत्रकार भी हुए, जिन्होंने व्याकरण की कठोर जकड़न से हिन्दी भाषा को आजाद करा कर जन सुलभ बनाने पर जोर दिया है। हिन्दी का स्वरूप निरन्तर अवश्य बदला पर प्रयोग के शौक और ज्ञान के अभाव में वह दूषित नहीं हुई थी, किन्तु यदि हम आज के समाचार-पत्रों की भाषा पर दृष्टि डालें तो पाएंगे कि बाजार के दबाव और सम्पादकों एवं संवाददाताओं की अनदेखी के कारण उसका स्वरूप भ्रष्ट हुआ है।”<sup>5</sup> यह बात अब सर्वमान्य है कि वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी अब साहित्य और आमजन की भाषा से इतर बाजार, मनोरंजन और विज्ञान की भाषा बनने के कारण अपनी राष्ट्रीय परिधि की घेराबंदी को तोड़ विश्वव्यापी भाषा बन रही है। वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी मीडिया अंग्रेजी मीडिया से कहीं अधिक लोकप्रियता पा रहा है। राष्ट्रीय पाठक सर्वेक्षण में पहले पांच सबसे अधिक बिकने वाले अखबार हिन्दी के हैं। अंग्रेजी के पत्रकारों ने भी यह बात स्वीकार की है कि जब हमारे लेख हिन्दी की पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते हैं तब हमें एक बड़े पाठक वर्ग की प्रतिक्रियाएँ मिलती हैं। अंग्रेजी वर्ग में तो हम कुलीन वर्ग या उलीट क्लास तक ही सीमित रहते हैं, लेकिन हिन्दी में छपकर समस्त देश से जुड़ जाते हैं।<sup>6</sup>

भाषा व्यक्ति को समाज से सम्बद्ध करने का संवेदनात्मक स्रोत है। जनभाषा के रूप में लोकप्रियता अर्जित करने के पश्चात् हिन्दी का प्रयोग आरम्भ में साहित्य सृजन हेतु किया गया, जिसके मूल में ‘स्वान्तः सुखायः’ एवं जन-उद्बोधन की भावना प्रबल थी। साहित्य और जीवन का अंतरंग सम्बन्ध है। डॉ. नगेन्द्र ने इस सम्बन्ध को दो रूपों में माना है – एक क्रिया के रूप में दूसरा प्रतिक्रिया के रूप में। क्रिया के रूप में

साहित्य जीवन की अभिव्यक्ति है और प्रतिक्रिया के रूप में वह जीवन का निर्माता और पोषक है।<sup>8</sup> साहित्य का प्रथम स्फुरण समाज में चलते परिवर्तनों को लक्ष्य करके होता है, इसलिए समाज में उसकी भागीदारी भीतरी स्तर पर और आंतरिक सरोकारों के बीच होती है। डॉ. नामवर के अनुसार साहित्य सत्य का उद्घाटन करता है। वह युग और काल की सीमाओं और सतहों को तोड़ता है और उनके भ्रमों को हटाकर सत्य को खोलकर पाठक या श्रोता के समक्ष रखता है।<sup>9</sup> हिन्दी ऐसी जनभाषा है जो सर्वसामान्य का हित करती है –

साहित्य वहीं होता है जहाँ भाषा होती है,  
प्रेम वहीं होता है जहाँ मातृभाषा होती है,  
एकता वहीं होती है जहाँ राष्ट्र भाषा होती है,  
सर्वा-हित वहीं होता है, जहाँ जनभाषा होती है।

हिन्दी को ज्यादा लोकप्रिय बनाने के लिए हमें अंग्रेजी के प्रति बढ़ते लगाव से बचना होगा। हिन्दी के शब्दों को ज्यादा सशक्त एवं प्रिय बनाने के लिए भी ध्यान देने की आवश्यकता है। मीडिया का सहयोग इस दिशा में ज्यादा अपेक्षित एवं प्रभावी होगा। आजादी के समय में भी मीडिया/पत्रकारिता ने अपनी महत्ती भूमिका का निर्वहन किया है। आज भारत देश को आवश्यकता है ऐसे ईमानदार पत्रकारों की जो इस दिशा में समर्पित भाव से कार्य करें। ऐसा होगा, तो निश्चित ही हिन्दी अपने स्वाभाविक रूप को प्राप्त कर सकेगी। वैश्वीकरण के दौर में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के उत्पाद के प्रचार में विज्ञापनों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। विकसित देश भारत को एक बड़े बाजार के रूप में देखते हैं। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को अपना माल भारत में बेचने के लिए अंग्रेजी को छोड़ हिन्दी को अपना पड़ रहा है। हिन्दी आज बाजार के लिए आवश्यक भाषा बन गई है। आज विश्व की दूसरी बड़ी भाषा हिन्दी है। भारत और अन्य देशों में 70 करोड़ से अधिक लोग हिन्दी बोलते, पढ़ते, लिखते हैं। आज राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी को महत्त्व दिया जा रहा है। संचार माध्यमों से हिन्दी की अपूर्व प्रगति हो रही है। अन्तर्राष्ट्रीय चैनलों से प्रसारित कार्यक्रमों में भी अंग्रेजी मिश्रित हिन्दी का प्रयोग किया जा रहा है। उदाहरण के लिए 'दिल मांगे मोर' प्रत्येक की जुबान पर चढ़ गया है। मीडिया व्याकरण के बिना नए शब्द व वाक्य बनाकर नई भाषा गढ़ रही है। आज बाजार की मुख्य भाषा हिन्दी है। समय की मांग को देखते हुए अंग्रेजी की अनेक प्रमुख पत्रिकाएँ हिन्दी में निकल रही हैं। इण्डिया टुडे, बिजनेस इण्डिया, बटर फोटोग्राफी आदि इसके उदाहरण हैं। आज टी.वी. चैनलों, फिल्मों और मनोरंजन की दुनिया में हिन्दी सबसे अधिक मुनाफे की भाषा है। कुल विज्ञापनों का लगभग 75 प्रतिशत हिन्दी माध्यम है। आज दो दर्जन से अधिक चैनल दिन-रात हिन्दी समाचार प्रसारित कर रहे हैं।

हिन्दी भारतीय संस्कृति, जीवन-मूल्यों एवं आदर्शों को संरक्षित रखने में समर्थ है। गांधी जी ने कहा था कि, 'राष्ट्रीय एकता के लिए हिन्दी भाषा अत्यन्त आवश्यक है, लेकिन साथ में मातृभाषाओं के विकास में किसी प्रकार की असावधानी नहीं होनी चाहिए। परस्पर सहयोग से ये भाषाएँ विकसित हों और हिन्दी सब भाषा-भाषियों को जोड़ने का साधन बने।'<sup>10</sup> वैश्विक बाजारवाद के इस युग में हिन्दी विश्व की सबसे लोकप्रिय भाषा बन गई है। 'बाजार' से अभिप्राय उस स्थान से है, जहाँ क्रेता और विक्रेता किसी वस्तु विशेष को खरीदने और बेचने के लिए मिलते हैं। बाजार स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय अथवा वैश्विक भी हो सकता है।<sup>11</sup> 'बाजार' किसी भी राष्ट्र की नाभि हो सकता है। इक्कीसवीं सदी में साम्राज्यवाद का बोलबाला है और कच्चे माल की प्राप्ति तथा बने माल की खपत स्तरीय माल का निर्माण ही किसी देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करता है।<sup>12</sup> वैश्वीकरण सीधा बाजार से जुड़ा है। बाजार का सीधा सम्बन्ध भाषा से है। आज बाजार ने राष्ट्रीय सीमाएँ तोड़ दी हैं, क्योंकि प्रत्येक देश चाहता है कि उसका माल बाजार में बिके, कहीं भी बिके, सात समुन्द्र पार बिके, माल बिकेगा तो उत्पादन बढ़ेगा। भूमण्डलीकरण और बाजारवाद के इस युग में हिन्दी की अहम् भूमिका बन गई है। वर्तमान युग में हिन्दी के प्रति जागरूकता, संवेदनशीलता बढ़ रही है। पिछले दो दशकों में हिन्दी का अन्तर्राष्ट्रीय विकास बहुत तेजी से हुआ है। वेब, विज्ञापन, संगीत, सिनेमा और बाजार के क्षेत्र में हिन्दी की मांग तेजी से बढ़ी है, वैसी किसी और भाषा की नहीं। संचार माध्यमों के कारण हिन्दी बोलने, समझने वालों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

निष्कर्षतः उपरोक्त विवेचन के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि हिन्दी मीडिया निश्चित रूप से वैश्विक समाज का एक ऐसा आईना बन गया है जिसमें पूरे विश्व की तस्वीर साफ दिखाई देती है। हिन्दी मीडिया ने सम्पूर्ण विश्व के लोगों को गाँव के लोगों की तरह करीब लाने और जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वैश्वीकरण के इस दौर में दूरस्थ देशों में होने वाली घटनाओं की जानकारी पलभर में ही प्राप्त कर सकते हैं या यों कहा जाए कि हम दुनिया को अपनी मुट्ठी में कैद कर सकते हैं। किसी समय ज्ञान को सबसे बड़ी शक्ति माना जाता था। ज्ञानी व्यक्ति का समाज में सर्वोत्तम स्थान होता था, लेकिन आज सूचना ही सबसे बड़ी शक्ति है। जिस व्यक्ति के पास सूचनाओं का जितना बड़ा भंडार है, वह उतना ही ताकतवर है। जापान में सूचनाओं के बारे में कहा जाता है कि यदि आपका सूचना पर अधिकार है, तब आप दुनिया के किसी भी राष्ट्र को कब्जे में कर सकते हैं।<sup>13</sup> रेडियो, टेलीविजन, फिल्म, इंटरनेट, वीडियो कैसेट, सी.डी. के अलावा समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तकें, पम्फ्लैट इत्यादि हिन्दी भाषा को सशक्त बनाने वाले मीडिया के महत्वपूर्ण माध्यम हैं और सच्चाई यह है कि विश्वग्राम की संकल्पना का आधार ही सैटेलाइट क्रांति है। हिन्दी मीडिया ने सम्पूर्ण विश्व के लोगों को गाँव के लोगों की तरह करीब लाने और जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। केवल आवश्यकता है तो सिर्फ अपनी मूल संवेदना और देश-प्रेम की। आशा ही नहीं अपितु विश्वास है कि हिन्दी जैसे आज तक प्रचार-प्रसार में आगे निकली है, भविष्य में भी अपने पंख फैलाकर विश्व की उड़ान भरती रहेगी।

### **संदर्भ**

1. डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, हिन्दी की वैश्विक महत्ता, पृ. 120
2. नरेश मिश्र, स्मारिका, 10वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन, पृ. 132
3. एम. अनन्त पदमनाभ भट्ट, राष्ट्र भाषा और राजभाषा द्वन्द्व क्यों, पृ. 13-14
4. वही, पृ. 133
5. डॉ. महेश दिवाकर, हिन्दी राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संदर्भ, पृ. 60
6. जया प्रियदर्शिनी, स्मारिका, 10वाँ हिन्दी सम्मेलन, पृ. 283
7. डॉ. चन्द्रकान्त मिसाल, विश्व पटल पर हिन्दी, पृ. 170
8. डॉ. नगेन्द्र, आस्था के चरण, पृ. 186
9. डॉ. नामवर सिंह, इतिहास और आलोचना, पृ. 17
10. राष्ट्र भाषा, (मासिक पत्रिका), अंक 2, फरवरी 2015, पृ. 12
11. टी.आर. जैन, व्यष्टि अर्थशास्त्र, पृ. 87
12. डॉ. अमर सिंह वधान इक्कीसवीं सदी के संवाद,, पृ. 74
13. स्मारिका, 10वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन, पृ. 135